IJAER/March-April-2022/Volume-11/Issue-2 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

श्रम शक्ति संरचना पर महिलाओं की वैवाहिक स्थिति का प्रभावः राजस्थान की अर्थव्यवस्था के सन्दर्भ में''

श्रीमती वीना यादव
शोधार्थी अर्थशास्त्र महाराज विनायक ग्लोबल विश्वविद्यालय कुकस
जयपुर

डॉ विक्रम सिंह
संकाय सदस्य अर्थशास्त्र विभाग
महाराज विनायक ग्लोबल विश्वविद्यालय कुकस
जयपुर

सार

श्रम शक्ति संरचना पर महिलाओं की वैवाहिक स्थिति विभिन्न कालावधियों में महिलाओं की प्रस्थिति में किस प्रकार परिवर्तन होता है और समाज में महिलाओं की प्रस्थिति को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक क्या हैं, इन सब के बारे में चर्चा करेंगे। प्रारंभ में हम महिलाओं की प्रस्थिति को परिभाषित करते हैं और फिर महिलाओं की प्रस्थिति के साथ जटलितापूर्वक जुड़े हुए विभिन्न कारकों की खोज करते हैं। में विभिन्न ऐतिहासिक चरणों में महिलाओं की प्रस्थिति पर चर्चा की गई है। परवर्ती परिच्छेद में ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में विभिन्न धर्मों के अंतर्गत महिलाओं की प्रस्थिति की झलक प्रस्तुत की जा रही है। इस इकाई के अंतिम परिच्छेद में विभिन्न ऐतिहासिक चरणों में भारतीय समाज में महिलाओं की बदलती हुई प्रस्थिति का उल्लेख है।

मुख्य शब्दः *श्रम शक्ति संरचना ,महिलाओं*

परिचय

इस इकाई में हम ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में महिलाओं की प्रस्थिति; विभिन्न कालावधियों में महिलाओं की प्रस्थिति में किस प्रकार परिवर्तन होता है और समाज में महिलाओं की प्रस्थिति को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक क्या हैं, इन सब के बारे में चर्चा करेंगे। प्रारंभ में हम महिलाओं की प्रस्थिति को परिभाषित करते हैं और फिर महिलाओं की प्रस्थिति के साथ जटलितापूर्वक जुड़े हुए विभिन्न कारकों की खोज करते हैं। परिच्छेद 2.3 में विभिन्न ऐतिहासिक चरणों में महिलाओं की प्रस्थिति पर चर्चा की गई है। परवर्ती परिच्छेद में ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में विभिन्न धर्मों के अंतर्गत महिलाओं की प्रस्थिति की झलक प्रस्तुत की जा रही है। इस इकाई के अंतिम परिच्छेद में विभिन्न ऐतिहासिक चरणों में भारतीय समाज में महिलाओं की बदलती हुई प्रस्थिति का उल्लेख है।

इस परिच्छेद में समकालीन भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति के अध्ययन का ऐतिहासिक संदर्भ प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। वर्तमान सामाजिक संरचना और इसमें महिलाओं की प्रस्थिति के

ठीक से समझने के लिए समाज को गढने वाले विभिन्न सामाजिक, ऐतिहासिक, आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक कारकों के बारे में जानना अनिवार्य है। भारत में महिलाओं की प्रस्थिति जानने के लिए कतिपय ऐतिहासिकता अनिवार्य है क्योंकि भारत में तीन हजार वर्षों से भी अधिक का सांस्कृतिक विरासत और सतत् इतिहास है। अंतिम परिच्छेद में समानता की दिशा में भारतीय समाज में महिलाओं की प्रस्थिति के उन्नयन के लिए महत्वपूर्ण कारकों को रेखांकित किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. विवाहित कामकाजी महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक और व्यक्तिगत विशेषताओं का घर और कार्यालय में उनकी कार्य प्रणाली के संबंध में अध्ययन करना।
2. विवाहित कामकाजी महिलाओं की सेवा की स्थिति का विश्लेषण करना।

महिलाओं की परिस्थिति को समझने के लिए विभिन्न मानदंड

"महिलाओं की प्रस्थिति" की अवधारणा को विभिन्न तरीकों से समझा जा सकता हैः परिवार, समुदाय और समाज के अंदर महिलाओं को सामाजिक और भौतिक संसाधनों की सुलभता की सीमा (डिक्सन 2013) या परिवार और समुदाय के अंदर उसकी शक्ति एवं प्राधिकार तथा अन्य पुरुष सदस्यों से प्राप्त सम्मान या अन्य स्थितियों से संबंधित होते हुए भी समाज व्यवस्था में स्थिति जिससे अंतर समझा जा सके (भारत में महिलाओं की संबंधी समिति 2014) या वह सीमा जहां तक महिलाओं को ज्ञान, आर्थिक संसाधन और राजनीतिक अधिकार सुलभ हैं इसके साथ उस स्वायत्तता की मात्रा जो उन्हें अपने जीवन चक्र के महत्वपूर्ण बिन्दु पर निर्णय लेने और व्यक्तिगत चुनाव में प्राप्त है।

महिलाओं की "प्रस्थिति" समाज के प्रबंधन में महिलाओं की सहभागी अधिकारों और उत्तरदायित्वों से सहसंबंधित है। इस शब्द से सामाजिक संरचना में अधिकारों और उत्तरदायित्वों की दृष्टि से पुरुषों की तुलना में महिलाओं की प्रस्थिति का पता चलता है। समाज में महिलाओं की प्रस्थिति की व्याख्या परम्परा, धर्म, विचारधारा के माध्यम से उनके लिए निष्चित "भूमिका" की दृष्टि और आर्थिक विकास की स्थिति से की जाती है। प्रस्थिति में उन्नयन का अनिवार्य रूप से अभिप्राय समाज में सहभागी अधिकारों के दायरे का विस्तार है। पुरुषों और महिलाओं के लिए अवसर संरचना जितना अधिक संतुलित होगी समाज में महिलाओं की भूमिका उतनी ही व्यापक होगी और इसके परिणामस्वरूप उनकी प्रस्थिति भी उच्चतर होगी। प्रस्थिति का विचार समानता के भाव का भी बोध कराता है।

यदि हम किसी समाज में महिलाओं की प्रस्थिति का अध्ययन करना चाहते हैं, तो हमें अनिवार्यतः उन भूमिकाओं की जटिलताओं का अध्ययन करना चाहिए जो महिलाएं समाज में सामाजिक.आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और राजनीतिक क्षेत्रों में निभाती हैं। ऐसे कारकों का पता लगाना भी महत्वपूर्ण है कि वे किस तरह जीवनपर्यन्त उन समस्याओं और परिस्थितियों का सामना करती हैं जो उनकी लिंगजन्य भूमिकाओं से संबंधित हैं और किस तरह वे इन भूमिका परिस्थितियों से स्वयं को समायोजित करती हैं।

पूर्व.औद्योगिक समाजों में महिलाएं

कई विद्वानों ने पुरुष प्रभुत्व और महिलाओं की निम्न प्रस्थिति के मुद्दे पर ऐतिहासिक प्रघटना के रूप में संबोधित करना शुरू कर दिया है जो संस्कृति की मानवीय प्रकृति के कुछ शाष्वत पहलू से प्रभावित होने की अपेक्षा परिस्थितियों के विशेष समूह में स्थित हैं। अनेक मार्क्सवादी और समाजवादी स्त्री अधिकारवादी दावा करते हैं कि लिंगों के बीच असमानता कैसे और क्यों आया, यह पता लगाने के लिए इतिहास का निरीक्षण करना आवष्यक है। लिंग विषयक स्तरीकरण वाले समाज में परिवर्तन का सबसे महत्वपूर्ण कारक नातेदारों के समूह को सामुदायिक संपत्ति जिसका इस संपत्ति पर अनन्य अधिकार था के रूप का विकास (नातेदार कारपोरेट संपत्ति)। नातेदारी के वरिष्ठ सदस्यों का संपत्ति पर नियंत्रण स्थापित हुआ। संग्रहकर्त्ता के रूप में महिलाएं उत्पादक के रूप में कार्य करती रहीं धीरे.धीरे उनका अपने उत्पादों पर से नियंत्रण समाप्त हो गया।

इतिहास के क्रम में पितृस्थानीय, मातृस्थानीय और बहुविवाह समाजों का विकास हुआ था। इस प्रकार विभिन्न पूर्व.औद्योगिक समाजों में एक समाज से दूसरे समाज में महिलाओं की स्थिति और लिंग संबंधी असमानताओं में भिन्नता थी और औद्योगीकरण के पष्चात् इसमें अनेक प्रकार से परिवर्तन आया है। औद्योगिक युग की तुलना में पूर्व औद्योगिक युग में पुरुषों और महिलाओं में कार्य और भावनात्मक भूमिकाओं में कहीं अधिक परस्पर भागीदारी थी। औपनिवेशिक अमेरिका में, पूर्व औद्योगिक समाज में पुरुषों और महिलाओं में अधिक समानता थी; महिला परिवार की आवष्यकताओं को पूरा करने के लिए श्रम करती थीं और पुरुष बच्चों के लालन.पालन में कहीं अधिक बड़ी भूमिका निभाते थे। औद्योगिकरण के साथ इस प्रवृत्ति में बदलाव आया, महिलाएं बहुधा बच्चें की देखभाल के लिए घर में रहती थीं और पुरुष काम करने फैक्टरियां जाते थे। औद्योगिकरण के साथ ही लिंग विषयक भूमिकाए और अधिक सुव्यक्त हो गईं जितना कि पहले कभी नहीं थी।

औद्योगीकरण और महिलाओं की परिवर्तित प्रस्थिति

आधुनिक औद्योगिक समाजों में भी हम लिंग विषयक भूमिकाओं में महत्वपूर्ण विभिन्नताएं पाते हैं। उदाहरण के लिए, समाजवादी समाजों में पूँजीवादी समाजों की तुलना में पुरुषों और महिलाओं के बीच अधिक समानता होने की प्रवृत्ति रहती है। वस्तुतः, एक समाज के अंदर भी हम विभिन्न वर्गों और प्रजातीय समूहों के लिए लिंग विषयक भूमिकाओं में महत्वपूर्ण भिन्नता पाते है।

पाष्चात्य यूरोपीय समाजों में औद्योगीकरण का परिणाम प्रभुत्वशाली परिपक्व स्त्रियोचित भूमिका के रूप में गृहणियों की आधुनिक भूमिका थी। इंग्लैण्ड में औद्योगिक क्रांति (1750 से 1841) के पष्चात् औद्योगिक क्रांति (1750 से 1841) के पष्चात औद्योगीकरण के आरंभिक चरणों में फैक्टरी प्रणाली ने व्यवस्थित रूप से उत्पादन की इकाई के रूप में परिवार का स्थान ले लिया। महिलाओं को फैक्टरियों में रोजगार मिल गया जहां उन्होंने वस्त्र उद्योग में अपना परम्परागत कार्य जारी रखा।

समकालीन समाजों में लिंग विषयक असमानताओं, महिलाओं की निम्न प्रस्थिति एवं महिलाओं के यौन शोषण की व्याख्या के लिए "पितृसत्ता" सबसे महत्वपूर्ण और प्रमुख अवधारणा है। केट मिलेट (2014) ने, लिंग और पुरुष केन्द्रित सत्ता.संरचना संबंधों जिसमें समाज में महिलाएं पुरुषों द्वारा नियंत्रित की जाती हैं, पर आधारित अन्तर्निहित राजनीति पर आधारित आधिपत्य एवं अधीनता की अवधारणा प्रस्तुत की है। उनके अनुसार इस तरह के संबंध "पितृसत्ता" – एक प्रणाली जिसमें "पुरुष का महिलाओं पर आधिपत्य"

होगा, के आधार पर व्यवस्थित है। वह विष्वास करती हैं कि पितृसत्ता मानव समाज में सबसे व्यापक विचारधारा है और सत्ता का आधार तथा अधिक कठोर, अधिक समरूप और अधिक स्थायी प्रणाली है। वह सुझाव देती हैं कि आधुनिक समाजों में 'लिंग' सभी व्यक्तियों के लिए पहचान का प्राथमिक स्रोत है। वह मानव समाज में पितृसत्ता के अस्तित्व का व्याख्या करने के लिए आठ कारकों को चिन्हित करती हैंः (क) प्राणि; विज्ञानिकीय; (ख) सैद्धान्तिक; (ग) समाजशास्त्रीय; (घ) वर्ग और अधीनता के बीच संबंध; (ड.) शैक्षणिक कारक; (च) पौराणिक कथा और धर्म; (छ) मनोवैज्ञानिक (ज) भौतिक शक्ति। वह पितृसत्तात्मक विचारधारा के सृजन के लिए श्रेष्ठतर पुरुष शक्ति और पुरुष (आक्रामक) तथा महिला (निष्क्रिय) के समाजीकरण के महत्व को महत्वपूर्ण मानती हैं।

केट के लिए परिवार पितृसत्ता की अत्यधिक महत्वपूर्ण संस्था है हालांकि पुरुष राज्य के माध्यम से विस्तृत समाज में भी शक्ति का प्रयोग करते हैं। परिवार में बच्चों को वैधता प्रदान करने की भी आवष्यकता है, अर्थात सामाजिक रूप से मान्यताप्राप्त पिता जिससे भी पुरुषों को एक विशेष रूप से प्रभुत्वशाली स्थिति प्राप्त होती है। माताएं और बच्चे पतियों और पिताओं की स्थिति पर निर्भर करते हैं। इस प्रकार परिवार पीढ़ी.दर.पीढी पितृसत्ता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वह मानती हैं कि महिलाओं की जाति सदृश प्रस्थिति (आरोपित) है जो सामाजिक वर्ग के दायरे से बाहर कार्य करता है। यहां तक कि उच्च वर्गीय महिलाएं पुरुषों के अधीन हैं। मिल्लेट इसे इस रूप में स्पष्ट करती हैं कि महिलाओं की पुरुषों पर आर्थिक निर्भरता उन्हें अधिकतर स्थानों पर वर्ग.व्यवस्था से बाहर रखती है।

अब तक श्रम बल की भागीदारी के संदर्भ में स्थिति का मूल्यांकन करने का प्रयास किया गया है। हालांकि, यह संभव है कि लोग श्रम बल में भाग न लें। इस मामले में, संबंधित लोगों के पास दो संभावनाएं हैंय स्वेच्छा से या अनैच्छिक रूप से श्रम बल में भाग नहीं लेते हैं। यह देखा जा सकता है कि जो लोग स्वेच्छा से गैर–भागीदारी का फैसला करते हैं, जो उच्च आय वाले घर में रहते हैं। यदि संबंधित लोग लागत–लाभ विश्लेषण करते हैं कि काम की आपूर्ति से उन्हें जो लाभ मिलता है, वह काम की आपूर्ति के बिना उन्हें मिलने वाले लाभ से कम है, और अगर वे काम नहीं करने का फैसला करते हैं, तो इसे भी स्वैच्छिक गैर–भागीदारी का एक उदाहरण माना जा सकता है। .

अनैच्छिक रूप से श्रम शक्ति की गैर–भागीदारी मुख्य रूप से एक दायित्व है, न कि निर्णय की समस्या, जो पारिवारिक जिम्मेदारियों और पारिवारिक समस्याओं या सांस्कृतिक दबावों के कारण होती है। ऐसी स्थितियां मुख्य रूप से पुरुषों के बजाय महिलाओं के सामने आती हैं। उदाहरण के लिए, महिलाओं को बच्चे की देखभाल की समस्या हो सकती है, घर का काम करना और वे अपनी जिम्मेदारियों को अन्य व्यक्तियों या संघ (जैसे कि किंडरगार्टन) को स्थानांतरित नहीं कर सकते हैं।

समान रूप से, कुछ मामलों में, कामकाजी महिलाओं के बारे में सामाजिक दबाव का महिलाओं की श्रम शक्ति की भागीदारी पर नकारात्मक प्रभाव पड सकता है। महिलाओं की श्रम शक्ति की भागीदारी के संबंध में, ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि क्षेत्र के विकास के परिणामस्वरूप बेरोजगारी का तथ्य उत्पन्न होता है, इसलिए लोग शहरी क्षेत्रों में प्रवास करने के लिए मजबूर होते हैं। इस स्थिति में, यदि संबंधित व्यक्तियों के पास शहरी रोजगार के अवसरों के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण और कौशल नहीं है, तो वे अनैच्छिक रूप से बेरोजगार हो सकते हैं या हतोत्साहित हो सकते हैं। इसके अलावा, महिलाओं के लिए अनैच्छिक रूप से श्रम बल की गैर–भागीदारी के लिए लिंग भेदभाव भी एक और स्पष्टीकरण हो सकता है।

साहित्य की समीक्षा

बनर्जी (2015) का मत था कि उनसे यह अपेक्षित था कि वे प्रदर्शित हों परिवार के सभी बडे सदस्यों का सम्मान और उनकी आज्ञा का पालन करें। उसे घर के कामों में सास की मदद करनी पडती थी जैसे कि सफाई, धुलाई, पानी खींचना, खाना बनाना, बच्चों का पालन–पोषण करना, मवेशियों की देखभाल करना और बीमारों और वृद्धों की देखभाल करना।

चौधरी– (2018) ने दिल्ली में ष्रोजगार में महिलाएंष पर एक अध्ययन करने का प्रयास किया। इसके लिए फरीदाबाद के एस्कॉर्ट्स प्लांट और दिल्ली के विभिन्न सुपर बाजार में काम करने वाली उन महिलाओं से 100 का सैंपल लिया गया। चर्चा के मूल बिंदुओं (जैसे शिक्षा, धर्म, आयु, वैवाहिक स्थिति, मुखबिरों की आय) के अलावा कामकाजी महिलाओं की समस्याओं पर भी चर्चा की गई। इन क्षेत्रों में शामिल थे प्रतिवादी का स्वास्थ्य, लाना बच्चों का पालन–पोषण करना, अपने पति के प्रति घरेलू कर्तव्यों और कर्तव्यों का प्रबंधन करना, विवाह और अन्य सामाजिक कार्यों में शामिल होने जैसे सामाजिक दायित्वों की पूर्ति करना।

सिंह (2017) ने पंजाब के आंकडों पर काम करते हुए खुलासा किया कि अधिकांश महिलाएं (82:) विशुद्ध रूप से आर्थिक कारणों से काम करती हैं। एक आर्थिक आवश्यकता का अर्थ हो सकता है जीवन की न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति करना या के स्तर को ऊपर उठाना रहना या अतिरिक्त आराम हासिल करना। सिंह के नमूना कार्य में 90: महिलाएं अपने ज्ञान का उपयोग करने का इरादा रखती हैं और अन्य 9: केवल खुद को व्यस्त रखने के लिए काम करती हैं जिसके लिए आर्थिक कारण मुख्य उद्देश्य नहीं है। उन्होंने आगे देखा कि रोजगार तलाशने का मकसद और भूमिका संघर्ष निकट से संबंधित है। उनके नमूने की कुछ महिलाएं काम की तलाश करती हैं क्योंकि वे यह नहीं मानती हैं कि उनका बाहरी रोजगार घर पर उनके काम में हस्तक्षेप करता है। घर में बोरियत, किसी प्रकार के काम में विशेष रुचि, आर्थिक स्वतंत्रता की भावना उनमें से कुछ को रोजगार तलाशने के लिए प्रेरित करती है। दूसरी ओर, ऐसी महिलाएं हैं जिनमें बाहरी काम के लिए कोई योग्यता नहीं है, लेकिन परिस्थितियों के कारण नौकरी की तलाश में हैं। उन्हें लगता है कि उनका बाहरी काम बच्चे के साथ हस्तक्षेप करता है देखभाल और अन्य घरेलू जिम्मेदारियां।

सिंह (2018) ने यह जांच करने के लिए आयोजित किया कि क्या शिक्षा एक है सामाजिक परिवर्तन का साधन। व्यवसाय, आवास पैटर्न, बच्चों के पालन–पोषण की प्रथाओं, पारिवारिक आय, स्वास्थ्य की आदतों, पोशाक के उपयोग, विलासिता, शौक और मनोरंजन, आर्थिक नियोजन, में भागीदारी जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण अंतर पाए गए। राजनीतिक गतिविधियों, आदिय शिक्षा के विभिन्न स्तरों के साथ। शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का एक साधन सिद्ध हुई।

मल्लादी सुब्बम्मा (2018) का विचार है कि महिलाओं को अपने शरीर और मानसिक श्रृंगार के कारण विशेष समस्याओं का सामना करना पडता है। पुरुष अपने परिवार के लिए आजीविका कमाने के लिए काम करते हैं, महिला सुबह से शाम तक घर चलाने के लिए काम करती है और बच्चों को पालने के लिए पुरुषों का श्रम गिना जाता है, उसके श्रम को ध्यान में नहीं रखा जाता है। वह अपने पति द्वारा एक परजीवी के रूप में तिरस्कृत है। यही वजह है कि महिलाएं अपने घरों के बाहर नौकरी स्वीकार

करने के लिए आगे आ रही हैं। तब एक कामकाजी महिला के लिए बहुत अधिक कठिन होता है। भारी काम करने वाले कार्यालय के बाद वह थक कर घर लौटती है। उसे एक ही बार में घरेलू कर्तव्यों को संभालने के लिए मजबूर किया जाता है। घर चलाना उसका काम है, न कि उसके पति का अगर वह बेरोजगार है। तो विवाहित कामकाजी महिलाओं को बोझ से दोगुना बोझ का सामना करना पडता है पुरुष जो महिलाओं को भ्रमित करता है।

निष्कर्ष

आज महिलाओं की समस्या घर के नक्शे के साथ–साथ आधिकारिक गतिविधियों में भी उनकी पहचान है। आज एक महिला जिस विकास कार्य का सामना कर रही है, वह है पहचान का निर्माण, क्योंकि यह उसे स्वयं की समझ के साथ–साथ उसके जीवन की संरचना की दृष्टि के लिए एक आधार प्रदान करता है। मर्सिया (1966–1980) ने चार प्रकार की पहचान को परिभाषित किया है अर्थात फौजदारी, पहचान उपलब्धि, अधिस्थगन और पहचान प्रसार। विवाहित कामकाजी महिला के मामले में यह एक सच्चाई है जो उसे स्थापित करना चाहती थी आय–सृजन गतिविधियों में भागीदार होने के नाते समाज में स्थिति। जैसा कि समाचारों से पता चलता है, समाज में महिलाएं कई समस्याओं से जूझ रही हैं रोज चमका जा रहा है। अब समाज में उनकी स्वतंत्र स्थिति और मान्यता के समर्थन में विभिन्न आंदोलन हो रहे हैं। राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में महिलाओं की भागीदारी को साबित करने के लिए सबूतों की कोई कमी नहीं है। राज्य साथ ही राष्ट्रीय सरकार ने विकास प्रक्रियाओं में भागीदारी के लिए महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए अच्छी संख्या में परियोजनाएं शुरू की हैं। अब तक किए गए सभी प्रकार के आंदोलनों का उद्देश्य समाज में महिलाओं की स्थिति को उजागर करना है। पर दूसरी ओर, इस दिशा में सामाजिक आंदोलन शानदार नहीं है जैसा कि हम आज की बात करते हैं। महिलाओं का रोजगार समाज में महिलाओं की सामाजिक गतिशीलता के लिए एक और मील का पत्थर है

संदर्भ

[1] बनर्जी (2015) मलेशिया में विवाहित पेशेवर महिलाओं के बीच कार्य परिवार संघर्ष" पीपी 662 – 664। सामाजिक मनोविज्ञान की पत्रिका।

[2] चौधरी– (2018) "नौकरी करने वाले पुरुषों और महिलाओं के बीच जीवन की संतुष्टि का अनुभव कियाष। जर्नल ऑफ कम्युनिटी गाइडेंस एंड रिसर्च। वॉल्यूम 19 नंबर – 3 पीपी 315 – 316।

[3] सिंह (2017) "सार्वजनिक प्रवचन में निजी चिंताएं"। आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक–अप्रैल–मई–2003।

[4] सिंह (2018) "शिक्षित महिलाओं के बीच स्थितिष। शास्त्रीय प्रकाशन कंपनी, नई दिल्ली– पीपी। 149.

[5] मल्लादी सुब्बम्मा (2018)– वेस्टव्यू प्रेस द्वारा "संयुक्त राज्य अमेरिकाष।

[6] चौधरी कामेश्वर–2002 –"भारत में महिलाओं के मानवाधिकार और शैक्षिक विकास"। शिक्षा के क्षेत्र में नए मोर्चे। शिक्षा के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल। पीआर 128–138।

[7] गांधी एम.के.–पुनर्प्रकाशित 1995, "आत्म संयम बनाम आत्म भोगष। नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद। पीपी 94 –96,102 –107

[8] ग्लेन। एम हॉर्टेंस –1959। "विवाहित महिलाओं के लाभकारी रोजगार के संबंध में महिलाओं का दृष्टिकोणष। गृह अर्थशास्त्र का जर्नल, अप्रैल 1959। पीपी – 247 – 252।

[9] हुनसेकर एस। जोहाना, 2014 – ष्कार्य और पारिवारिक जीवन को एकीकृत किया जाना चाहिए"। "प्रबंधन में महिलाएं" बेट्टे, एनस्टेड, यूनिवर्सिटी ह्यूस्टन प्रेंटिस हॉल इंक एंगलवुड क्लिफ्स। पीपी. 68–72.

[10] कैला एच.एल. –2015 – "विभिन्न मुद्दों के प्रति महिला कार्यकारी का दृष्टिकोण और धारणा" –"सामुदायिक मार्गदर्शन और अनुसंधान" का एक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण जर्नल। वॉल्यूम। 16– मई

[11] लौरा और नादेर – 2016 – "संघर्ष" ष्सामाजिक विज्ञान का अंतर्राष्ट्रीय विश्वकोशष। मैकमिलन प्रा. लिमिटेड न्यूयॉर्क।

[12] लाइनरबर्गर पेट्रीसिया और केवेनी जे। टिमोथी –2017 – ष्रोजगार में यौन उत्पीडन"। "प्रबंधन में महिलाएं"। दूसरा। बेट्टे एनस्टेड, ह्यूस्टन विश्वविद्यालय द्वारा संपादित संस्करण। अप्रेंटिस हॉल इंक। एंगलवुड क्लिफ्स। पीपी 196–206।

[13] माथुर दीपा –2018 – ष्महिलाएं, परिवार और कामष। रावत प्रकाशन, जयपुर पीपी। 154.

[14] मिशेल (एड) ए – 2019 "यूरोप और अमेरिका में नियोजित महिलाओं के पारिवारिक मुद्देष। ई.जे. ब्रिल, लीडेन। पीपी –166।

[15] नानवीती पीलू, बेदी एम. फ्रेडा–2015– "भारत की महिलाएं" – भारत सरकार के सूचना और प्रसारण मंत्रालय।